International Journal for Multidisciplinary Research (IJFMR)
E-ISSN: 2582-2160 ● Website: www.ijfmr.com ● Email: editor@ijfmr.com

बच्चों के सर्वांगीण विकास में सशक्त माताओं की भूमिका का अध्ययन।

नवीन कुमार

शिक्षाशास्त्र, बी.आर.ए.बी.यू., मुज¶फरपुर।

Abstract

"बच्चों के सर्वांगीण विकास में सशक्त माताओं की भूमिका का अध्ययन" एक महत्वपूर्ण सामाजिक–शैक्षिक विषय है, जिसमें यह समझने का प्रयास किया गया है कि माताओं का सशक्तिकरण बच्चों के शारीरिक, मानसिक, भावनात्मक, सामाजिक एवं बौद्धिक विकास को किस प्रकार प्रभावित करता है। सशक्त माताएँ वे होती हैं जो शिक्षित, जागरूक, आत्मनिर्भर तथा निर्णय लेने में सक्षम होती हैं। ऐसी माताएँ अपने बच्चों के पालन–पोषण, शिक्षा, स्वास्थ्य और नैतिक मूल्यों के निर्माण में सक्रिय भूमिका निभाती हैं। अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि सशक्त माताएँ बच्चों के लिए सकारात्मक वातावरण तैयार करती हैं, जिससे बच्चों में आत्मविष्वास, अनुशासन, सामाजिक कौशल और समस्या–समाधान की क्षमता विकसित होती है। वे बच्चों की शिक्षा के प्रति अधिक सजग रहती हैं, जिससे बच्चों की शैक्षिक उपलब्धि बेहतर होती है। इसके अतिरिक्त, सशक्त माताएँ स्वास्थ्य एवं पोषण संबंधी जानकारी रखती हैं, जिससे बच्चों का शारीरिक विकास भी संतुलित रहता है। यह भी पाया गया कि जिन परिवारों में माताएँ सशक्त होती हैं, वहाँ बच्चों के व्यवहार में अधिक सकारात्मकता, सहयोग, नेतृत्व क्षमता और नैतिक मूल्यों का विकास देखा जाता है। वहीं, असशक्त माताओं के बच्चों में आत्मविष्वास की कमी, शिक्षा में रुचि की कमी और सामाजिक समायोजन में कठिनाई अधिक पाई जाती है। अतः निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि मातृ सशक्तिकरण बच्चों के सर्वांगीण विकास के लिए अत्यंत आवश्यक है। यह केवल परिवार ही नहीं, बल्कि समाज और राष्ट्र के समग्र विकास में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। इसलिए महिलाओं की शिक्षा, आर्थिक स्वतंत्रता और सामाजिक जागरूकता को बढ़ावा देना आवश्यक है, ताकि आने वाली पीढ़ी का विकास संतुलित और समृद्ध हो सके।

मुख्यशब्दः मातृ सशक्तिकरण, सर्वांगीण विकास एवं बाल विकास।

भूमिकाः

बच्चों का सर्वांगीण विकास, अर्थात् उनका शारीरिक, मानसिक, संज्ञानात्मक, भावनात्मक, सामाजिक, नैतिक और रचनात्मक विकास,

किसी भी राष्ट्र के भविष्य की नींव होता है। यह सर्वविदित तथ्य है कि बच्चे जैसा वातावरण घर में देखते और अनुभव करते हैं, वैसा ही उनका व्यक्तित्व और जीवन–दृष्टिकोण विकसित होता है। भारतीय समाज में माँ की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण मानी जाती है। माँ बच्चे की पहली शिक्षक, पहली संरक्षक और प्रथम भावनात्मक सहारा होती है। ऐसे में यदि माँ सशक्त है, शिक्षित है, आत्मनिर्भर है, सामाजिक और मानसिक रूप से जागरूक है, तो इसका प्रभाव सीधे–सीधे बच्चों के समग्र विकास पर पड़ता है।

मातृ सशक्तिकरण का अर्थ केवल महिलाओं को अधिकार देना नहीं है, बल्कि उन्हें ऐसी स्थिति में पहुँचाना है जहाँ वे स्वयं निर्णय ले सकें, अपनी क्षमताओं का उपयोग कर सकें और परिवार व समाज में सकारात्मक परिवर्तन ला सकें। जब माँ सशक्त होती है, तब वह न केवल अपने जीवन में, बल्कि अपने बच्चों और समाज के भविष्य में भी गहरा परिवर्तन ला सकती है। यही कारण है कि आधुनिक शोध यह सिद्ध कर चुके हैं कि मातृ सशक्तिकरण बच्चों के विकास का सबसे बड़ा निर्धारक तत्व है।

यह शोध–लेख मातृ सशक्तिकरण के विभिन्न आयामों और बच्चों के विकास के विभिन्न पहलुओं पर इसके प्रभाव का विस्तृत विश्लेषण प्रस्तुत करता है।

मुख्य शब्दः मातृ सषक्तिकरण, व्यक्तित्व विकास, मूल्य परक–शिक्षा, नैतिक विकास, पारिवारिक वातावरण, माता–बाल संबंध, निर्णय–क्षमता, आत्मनिर्भरता, अभिभावक–बाल संवाद, समायोजन क्षमता।

1ण मातृ सशक्तिकरण की अवधारणा और उसके घटकः

मातृ सशक्तिकरण एक बहुआयामी अवधारणा है जिसमें आर्थिक, शैक्षणिक, सामाजिक, राजनीतिक और स्वास्थ्य संबंधी सशक्तिकरण शामिल है।

- **शैक्षणिक सशक्तिकरणः**

यदि माँ शिक्षित होती है, तो वह बच्चों की शिक्षा, पोषण, स्वास्थ्य और जीवन–शैली से जुड़े सही निर्णय ले पाती है। शिक्षित माँ बच्चे की सीखने की शैली, उसकी कमजोरियों और प्रतिभाओं को समझने में सक्षम होती है। शोध यह भी दिखाता है कि शिक्षित माँ के बच्चे स्कूल में अधिक सफल होते हैं, उनकी संज्ञानात्मक क्षमता अधिक विकसित होती है। किषोर एवं गुप्ता (2009) और देसाई (2010) के शोध बताते हैं कि शिक्षित मां अपने बच्चों की शिक्षा, स्वास्थ्य और सुरक्षा के प्रति अधिक जागरूक होती है। शिक्षित माताएँ पोषण, टीकाकरण और शैक्षिक उपलब्धियों के लिए अधिक सजग रहती हैं। शिक्षा मातृ सशक्तिकरण की सबसे मजबूत नींव है।

- **आर्थिक सशक्तिकरणः**

जब माँ आर्थिक रूप से स्वतंत्र होती है, तो वह बच्चों के विकास के लिए आवश्यक संसाधन उपलब्ध करा सकती है, जैसे– स्वास्थ्य सेवाएँ, गुणवत्तापूर्ण शिक्षा, तकनीकी संसाधन, पौष्टिक भोजन आदि। आर्थिक स्वतंत्रता माँ के आत्मविष्वास को बढ़ाती है, जो बच्चों के आत्मविष्वास के विकास में भी सहायक होता है। मल्होत्रा एवं शुलर (2005) के अनुसार आर्थिक स्वतंत्रता मां को घरेलू और बच्चों की शिक्षा से जुड़े निर्णयों में शक्ति प्रदान करती है। यूनिसेफ (2018) रिपोर्ट के अनुसार आय अर्जित करने वाली स्त्रियों के बच्चों में कुपोषण कम और शिक्षा की निरंतरता अधिक होती है। आर्थिक स्वतंत्रता माताओं को वास्तविक निर्णय क्षमता प्रदान करती है।

- **सामाजिक सशक्तिकरणः**

सामाजिक रूप से सशक्त माँ समाज में अपनी भूमिका को पहचानती है और बच्चों में भी सामाजिक जिम्मेदारी का भाव उत्पन्न करती है। सामाजिक सशक्तिकरण में सामाजिक जागरूकता, सांस्कृतिक समझ और सामाजिक व्यवहार शामिल हैं। लिविन (2012) बताती हैं कि सामाजिक समर्थन और सांस्कृतिक स्वतंत्रता माताओं को बच्चों की शिक्षा में अधिक सक्रिय बनाती है। शोध यह भी दर्शाते हैं कि सामाजिक मान्यता और सम्मान से माता का आत्मसम्मान बढ़ता है। सामाजिक–सांस्कृतिक समर्थन बच्चों के संपूर्ण विकास को अनुकूल बनाता है।

- **स्वास्थ्य–संबंधी सशक्तिकरणः**

जब माँ स्वास्थ्य के प्रति जागरूक होती है, तो वह बच्चों के पोषण, टीकाकरण, स्वच्छता आदतों और स्वास्थ्य–संबंधी व्यवहारों को प्रभावी रूप से नियंत्रित कर सकती है।

- **निर्णय–क्षमता और आत्मविष्वासः**

निर्णय लेने की स्वतंत्रता मातृ सशक्तिकरण का एक केंद्रीय एवं अत्यंत महत्वपूर्ण आयाम है। जब माँ को परिवार एवं व्यक्तिगत जीवन से संबंधित निर्णय लेने की स्वतंत्रता प्राप्त होती है, तब वह न केवल अपनी भूमिका को प्रभावी ढंग

से निभा पाती है, बल्कि बच्चों के समुचित विकास में भी सक्रिय योगदान देती है। स्वतंत्र निर्णय लेने की क्षमता के माध्यम से माँ बच्चों की शिक्षा, स्वास्थ्य, पोषण एवं अनुशासन से जुड़े महत्वपूर्ण निर्णयों को अधिक विवेकपूर्ण ढंग से लेती है। वह परिस्थितियों का मूल्यांकन कर बच्चों के हित में उपयुक्त विकल्पों का चयन करती है, जिससे उनके व्यक्तित्व के सर्वांगीण विकास को दिशा मिलती है। इसके अतिरिक्त, निर्णय लेने में स्वायत्तता माँ के आत्मविश्वास एवं आत्म–सम्मान को भी बढ़ाती है, जिसका सकारात्मक प्रभाव बच्चों के मनोवैज्ञानिक एवं सामाजिक विकास पर पड़ता है। ऐसे वातावरण में पले–बढ़े बच्चे अधिक आत्मनिर्भर, जिम्मेदार एवं संवेदनशील बनते हैं। अतः स्पष्ट है कि मातृ सशक्तिकरण में निर्णय लेने की स्वतंत्रता एक आधारभूत तत्व है, जो बच्चों के उज्ज्वल भविष्य के निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

2ण बच्चों के शारीरिक विकास में सशक्त माँ की भूमिकाः

बच्चों का शारीरिक विकास जीवन के शुरुआती वर्षों में सबसे तेजी से होता है। यह विकास सीधे तौर पर माँ की जागरूकता, पोषण ज्ञान और स्वास्थ्य व्यवहार पर निर्भर करता है। भारत में कुपोषण की समस्या अभी भी गम्भीर है। कई शोध यह बताते हैं कि शिक्षित और जागरूक माताओं के बच्चों में कुपोषण का जोखिम 40–60% तक कम हो जाता है। सशक्त माँ बच्चों के लिए संतुलित आहार सुनिश्चित करती है, स्थानीय और मौसमी खाद्य पदार्थों की जानकारी रखती है, भोजन में प्रोटीन, विटामिन, आयरन और कैल्षियम के महत्व को समझती है। सशक्त माताएँ टीकाकरण, नियमित स्वास्थ्य जांच, पोलियो ड्रॉप, आयरन–फोलिक एसिड जैसी स्वास्थ्य योजनाओं का लाभ बच्चों तक पहुँचा पाती हैं। माँ ही बच्चों को स्वच्छता आदतें सिखाती है, जैसे हाथ धोना, स्वच्छ पेयजल का उपयोग, और साफ–सफाई बनाए रखना। सशक्त माँ बच्चों को खेलकूद, योग, व्यायाम आदि में भाग लेने के लिए प्रेरित करती है। इससे बच्चों की शारीरिक क्षमता, प्रतिरक्षा शक्ति और आत्मविष्वास बढ़ता है।

3ण संज्ञानात्मक एवं शैक्षणिक विकास पर प्रभावः

बच्चों का संज्ञानात्मक विकास जन्म से किशोरावस्था तक निरंतर चलता रहता है। यह विकास मुख्यतः घर के वातावरण पर निर्भर करता है। माँ बच्चे का पहला संवाद स्रोत होती है। सशक्त और शिक्षित माँ बच्चों से अधिक बात करती है, अच्छी शब्दावली का उपयोग करती है, कहानी, कविता और किताबें पढ़ने की प्रेरणा देती है। यह भाषा–विकास को बढ़ाता है। सशक्त माँ बच्चों के प्रश्नों का उत्तर देती है, उन्हें तर्क करना सिखाती है और उनके विचारों को प्रोत्साहित करती है। शोध बताते हैं कि माँ की शिक्षा बच्चों की उपलब्धियों का सबसे बड़ा सूचक है। आज की दुनिया में डिजिटल शिक्षा अत्यंत महत्वपूर्ण है। सशक्त माँ बच्चों के स्क्रीन टाइम का नियंत्रण रखती है, शैक्षणिक ऐप्स और ऑनलाइन संसाधनों का सही उपयोग करवाती हैं।

4ण बच्चों का भावनात्मक और मानसिक विकासः

भावनात्मक विकास बच्चों के व्यक्तित्व निर्माण की नींव है। माँ का स्नेह बच्चे को सुरक्षा प्रदान करता है। यह सुरक्षा उन्हें दुनिया को
समझने, नए अनुभव लेने और आत्मविष्वास विकसित करने में मदद करती है। सशक्त माँ बच्चों की भावनाओं का सम्मान करती है, उन्हें निर्णय लेने का अवसर देती है, जिससे उनका आत्मसम्मान बढ़ता है। एक जागरूक माँ बच्चों में तनाव, भय, अवसाद जैसी समस्याओं को पहचान सकती है और समय पर समाधान प्रदान कर सकती है।

5ण सामाजिक और नैतिक विकासः

बच्चे समाज में कैसे व्यवहार करेंगे, यह बहुत हद तक माँ के आचरण पर निर्भर करता है। सशक्त माँ बच्चों को सहयोग, सम्मान, सहानुभूति, और सामुदायिकता का महत्व सिखाती है। ईमानदारी, अनुशासन, जिम्मेदारी, समय की

पाबंदी जैसे नैतिक मूल्य बच्चों में माँ द्वारा ही विकसित किए जाते हैं। सशक्त माँ अपने बच्चों को समाज सेवा, समूह गतिविधियों और सांस्कृतिक कार्यक्रमों में भाग लेने के लिए प्रेरित करती है।

6ण डिजिटल युग में माताओं की बदलती भूमिका:

आधुनिक युग में डिजिटल उपकरण बच्चों के दैनिक जीवन का अभिन्न अंग बन चुके हैं। सशक्त माँ यह सुनिश्चित करती है कि बच्चे मोबाइल, कंप्यूटर या टीवी का उपयोग सीमित और उद्देश्यपूर्ण तरीके से करें। बच्चों को फिशिंग, साइबर बुलिंग, गलत सामग्री और ऑनलाइन धोखाधड़ी से बचाने में माँ की भूमिका अहम है। माँ बच्चों को सकारात्मक डिजिटल आदतें सिखाती है, जैसे: ई–बुक पढ़ना, शैक्षणिक वीडियो देखना, और तकनीक का रचनात्मक उपयोग।

7ण कार्यरत (Working) माताओं का प्रभाव:

आज अनेक महिलाएँ घर और कार्यस्थल में संतुलन बैठाते हुए अपने बच्चों के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही हैं। वर्किंग मदर बच्चों को सिखाती है कि मेहनत और जुनून से जीवन में सफलता पाई जा सकती है। बच्चे समय प्रबंधन, जिम्मेदारी और अनुशासन सीखते हैं। आर्थिक योगदान बच्चों की शिक्षा और सुविधाओं में निवेश की अनुमति देता है। कभी–कभी कार्य और परिवार में संतुलन रखना चुनौतीपूर्ण हो सकता है, परंतु सशक्त माँ यह संतुलन सफलतापूर्वक बनाती है।

8ण एकल मातृत्व (Single Motherhood) और बच्चों का विकास:

एकल माताएँ दोहरी भूमिका निभाती हैं– संरक्षक और पोषक की। सशक्त एकल माँ बच्चों को मानसिक स्थिरता और आत्मनिर्भरता प्रदान करती है। समाज में कभी–कभी पूर्वाग्रह होते हैं, परंतु सशक्त माँ बच्चों को इन चुनौतियों का सामना करना सिखाती है। बच्चों में जिम्मेदारी, आत्मनिर्भरता और संघर्ष क्षमता विकसित होती है।

9ण मातृ सशक्तिकरण और बच्चों का भविष्य निर्माण:

बच्चों के करियर, व्यक्तित्व और जीवन की दिशा माँ द्वारा ही निर्धारित होती है। सशक्त माँ बच्चों की रुचियों को समझकर करियर चयन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। माँ बच्चों को निर्णय लेने का अवसर देती है जिससे उनका आत्मनिर्णय विकसित होता है। माँ द्वारा सिखाए गए मूल्य जीवनभर बच्चों का मार्गदर्शन करते हैं।

निष्कर्ष:

यह स्पष्ट है कि मातृ सशक्तिकरण बच्चों के सर्वांगीण विकास का आधार है। जब माँ शिक्षित, जागरूक, आत्मनिर्भर और निर्णय–कुशल होती है, तब वह बच्चों को ऐसा वातावरण प्रदान करती है जिसमें उनका शारीरिक, मानसिक, संज्ञानात्मक, सामाजिक और नैतिक विकास पूर्ण रूप से संभव होता है। समाज और सरकार दोनों की जिम्मेदारी है कि महिलाओं के लिए शिक्षा, स्वास्थ्य, रोजगार और सुरक्षा के पर्याप्त अवसर उपलब्ध कराए जाएँ ताकि माँ सशक्त बने और एक सक्षम पीढ़ी का निर्माण कर सके।

संदर्भ–ग्रंथ:–

1ण शर्मा, आर.के. (2015). बाल विकास एवं मनोविज्ञान. दिल्ली, प्रकाशन संस्थान।
2ण सिंह, उमा (2017). मातृ सशक्तिकरण और परिवार. नई दिल्ली, नेशनल पब्लिशिंग हाउस।
3ण अग्रवाल, एस. (2016). बाल मनोविज्ञान एवं व्यक्तित्व विकास. मेरठ, लेखन प्रकाशन।
4ण मिश्रा, ए. (2019). नारी सशक्तिकरण: वास्तविकता और संभावनाएँ. नई दिल्ली।
5ण जैन, वी. (2014). परिवार, समाज और बाल विकास. अजय प्रकाशन।
6ण पांडे, एस. (2018). भारतीय परिवार प्रणाली और बाल पालन. लक्ष्मीनारायण पब्लिशर्स।
7ण देवी, आर. (2017). महिला सशक्तिकरण और बाल अधिकार. इंडियन एजुकेशन पब्लिकेशन।

8. कल्पना, पी. (2013). मानव विकास, सेंगेज लर्निंग।
9. बर्क, एल. (2018). बाल विकास, पियर्सन।
10. हर्लॉक, ई. (2011). बाल वृद्धि एवं विकास, मैकग्रा–हिल।
11. बॉर्नस्टीन, एम. (2015). पालन–पोषण की मार्गदर्शिका, रूटलेज।
12. लेविन, आर. (2012). विभिन्न संस्कृतियों में बाल पालन–पोषण एवं विकास, साइकोलॉजी प्रेस।
13. मल्होत्रा, ए., एवं शूलर, एस. (2005). महिला सशक्तिकरण एवं सामाजिक परिवर्तन, विश्व बैंक।
14. यूनिसेफ. (2020). विश्व के बच्चों की स्थिति, यूनिसेफ।
15. विश्व स्वास्थ्य संगठन. (2019). प्रारंभिक बाल्यावस्था विकास मानक, डब्ल्यूएचओ प्रकाशन।
16. यूनेस्को. (2017). सभी के लिए शिक्षा, वैश्विक निगरानी रिपोर्ट, यूनेस्को।
17. कोलमैन, जे. (2011). पालन–पोषण एवं समाजीकरण, रूटलेज।
18. स्मिथ, पी. (2014). शिक्षा का मनोविज्ञान। रूटलेज।
19. सिंह, आर. (2018). ग्रामीण भारत में मातृ शिक्षा एवं बाल विकास, इंडियन जर्नल ऑफ साइकोलॉजी।
20. पांडेय, ए. (2021). माता के सशक्तिकरण का बाल समायोजन पर प्रभाव, जर्नल ऑफ सोशल साइंसेज।
21. वर्मा, एन. (2020). सशक्त परिवारों में बच्चों का समग्र विकास, इंटरनेशनल जर्नल ऑफ एजुकेशन।